गांधी–दर्शन

श्याम शंकर उपाध्याय
पूर्व जनपद एवं सत्र न्यायाधीश/
पूर्व विधिकपरामर्शदाता मा0 श्रीराज्यपाल
उत्तर प्रदेश, राजभवन
लखनऊ।
मोबाइल : 9453048988
e-mail : ssupadhyay28@gmail.com

1. गांधी जी के जन्मदिवस 02 अक्टूबर पर तथा अन्य अवसरों पर भी प्रायः गांधीवाद की चर्चा होती रहती है। यह गांधीवाद अथवा गांधीदर्शन क्या है, इसी पर आज के अवसर पर मैं अपनी बात रखना चाहता हूं।

2. 'मनुर्भव' तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' भारतीय संस्कृति एवं दर्शन का विश्व मानवता के लिए कालजयी उद्घोष रहा है जिसे गांधी जी ने अपने जीवन में पूरी तरह आत्मसात कर लिया था। गांधी जी का चिंतन वास्तव में कोई नया दर्शन अथवा चिंतन नहीं था और न ही भारतीय समाज ऐसे किसी चिंतन अथवा दर्शन से गांधी जी के कारण प्रथम बार परिचित ही हुआ था। भारतीय संस्कृति के सनातन मूल्य, चिन्तन परम्परा जो वेदों, उपनिषदों और स्मृतियों आदि में हजारों साल पहले से विद्यमान थे, उसी को गांधी जी ने अपने जीवन, व्यवहार तथा आचरण में उतार लिया था। भारतीय संस्कृति एवं दर्शन के इन विचारों में इतनी असीमित शक्ति थी कि उन्हें धारण करने के बाद स्वयं गांधी जी भी विश्व के लिए एक श्रेष्ठ आदर्श के रूप में अनुकरणीय और वन्दनीय हो गये।

3. भारतीय संस्कृति एवं दर्शन से प्रेरित होने के कारण जीवन और जगत को लेकर गांधी जी की दृष्टि समग्र दृष्टि थी। गांधी–चिन्तन वस्तुतः सनातन भारतीय चिन्तन–परम्परा और दार्शनिकता का तत्कालीन परिस्थितियों में गांधी जी द्वारा किया गया व्यावहारिक रूपान्तर था। गांधी–दर्शन यदि सम्पूर्ण विश्व में स्वीकार्यता और मान्यता प्राप्त कर सका है तो उसके मूल में सनातन भारतीय चिन्तन परम्परा और दर्शन का बल कारक के रूप में रहा है। गांधी जी के चिंतन में द्वैत अथवा विभेद नहीं था। गांधी जी के चिंतन का चाहे धार्मिक एवं नैतिक पक्ष रहा हो अथवा राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक पक्ष, सब पर भारतीय चिंतन परम्परा का गहरा प्रभाव था। राजनैतिक, आर्थिक और सामरिक दृष्टि से क्षिन्न–भिन्न, निर्बल और परतंत्र हो चुके भारतवर्ष में सर्वथा शस्त्रहीन गांधी जी की आवाज यदि उस युग के सबल और पराक्रमी ब्रिटिश शासकों में भय और कम्पन पैदा करने में समर्थ थी तो उसके पीछे गांधी जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व की प्रबल नैतिक शक्ति थी।

4. राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद जैसी अवधारणाओं को भी गांधी जी का समर्थन तभी तक था जब तक राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद मानवता के विरूद्ध नहीं थे अपितु उनके पोषक थे। गांधी जी मानवता को खंडित अथवा तिरस्कृत करने वाली राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद की अवधारणा के समर्थक नहीं थे। राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद जैसी अवधारणाओं से बहुत ऊपर उठ जाने के कारण ही गांधी जी और उनका चिंतन समग्र विश्व में असाधारण रूप से स्वीकार्यता प्राप्त कर सका था। गांधी जी किसी भी अभीष्ट अथवा साध्य को

अनैतिक साधनों से प्राप्त करने के पक्षधर नहीं थे, यहीं कारण था कि गांधी जी का जीवन सत्य के साथ निरन्तर प्रयोग करते रहने वाली प्रयोगशाला की भांति था।

5. गांधी जी को हिंसा किसी भी रूप में स्वीकार्य नहीं थी। गांधी जी की अहिंसा का तात्पर्य केवल मानव द्वारा मानव के विरूद्ध की गयी हिंसा से ही नहीं था अपितु गांधी जी जीव मात्र के विरूद्ध की जाने वाली सभी प्रकार की हिंसा के विरोधी थे। हिंसा, विध्वंस और अशांति से कराह रहे विश्व में गांधी जी का अहिंसा सम्बन्धी चिंतन विश्व शांति एवं मानवता के कल्याण के लिए वर्तमान में एक मात्र विकल्प है जिस पर विश्व को थक हार कर कभी न कभी अन्ततः लौटना ही होगा। गांधी जी एक व्यक्ति के रूप में विश्व में अब भले विद्यमान नहीं हों परन्तु वह एक सशक्त और जीवन्त वैचारिक संस्थान के रूप में आज भी मानवता के बीच विद्यमान हैं।

6. गांधी जी धर्मनिष्ठ आचरण के प्रबल आग्रही थे। गांधी जी राजनीति सहित जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में धर्मसम्मत आचरण के आग्रही थे। गांधी जी ईश्वर की नित्यप्रति प्रार्थना किया करते थे और कुछ चुनिन्दा भजनें गाया करते थे। उनका कहना था कि प्रार्थना से उनका मन निर्मल होता है और उन्हें सत्य और सद्वृत्ति के पथ पर चलने की शक्ति और प्रेरणा मिलती है। गांधी जी का धर्म वास्तव में वह था जिसका उद्घोष वेद और मनुस्मृति करती है। गांधी जी की दृष्टि में धर्म का आशय मजहबी प्रकृति की धार्मिकता से नहीं था अपितु धर्म वास्तव में शाश्वत, मानवीय एवं नैतिक मूल्यों का पर्यायवाची था। गांधी जी धर्म को जिस रूप में स्वीकार करते थे, उसका स्वरूप निम्नांकित प्रकार थाः
   परहित सरिस धर्म नहिं भाई, परपीड़ा सम नहिं अधमाई। (रामचरित मानस)
   अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्, परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् । (महाभारत)
   वैष्णव जन तो तेते कहिए पीर पराई जाने जो (गांधी जी)

7. गांधी जी की दृष्टि में धर्मविहीन राजनीति वेश्यातुल्य थी। राजनीति नैतिक और मानवीय मूल्यों पर आधारित हो, सत्य, करुणा, क्षमा, विवेक, असंग्रह, लोक कल्याण के दर्शन से प्रेरित हो तो इसका विरोध भला कौन कर सकता है।

8. दर्शन और विचारधारा को क्रियात्मक रूप देना गांधी जी का शौक था। गांधी जी का चिंतन व्यक्ति और व्यक्ति के बीच वर्ण, जाति, समुदाय और राष्ट्र की विभाजक दीवारों को लेकर किसी प्रकार का विभेद नहीं करता है। उनके चिंतन की यही सर्वग्राही व्यापकता उन्हें संसार भर में आदर्श के रूप में स्वीकार्य बना सकी थी।

9. गांधी जी का आर्थिक चिंतन ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त के नाम से जाना जाता है। गांधी जी भौतिक सम्पदा के अनावश्यक संग्रह के विरोधी थे और अपरिग्रह के सनातन भारतीय सिद्धान्त के अनुयायी थे। भ्रष्टाचार और अनाचार जैसी बुराईयों पर अंकुश लगा पाने में यदि विभिन्न प्रकार की शासन पद्धतियां विफल दिखती हैं तो उसका मूल कारण भौतिक सम्पदा के संग्रह के प्रति लोगों की विवेकहीन लोलुपता तथा अपरिग्रह के सनातन सिद्धान्त से दूर चले जाना बड़ा कारण है। आज के युग में आवश्यक नहीं होते हुए भी धन संग्रह की लोलुपता में फंसी हुई मानव जाति के लिए गांधी जी के अपरिग्रह अथवा ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त नितान्त अनुकरणीय है। भ्रष्टाचार

और अनैतिक साधनों से धन संग्रह की प्रवृत्ति को वर्तमान दौर में तमाम वैधानिक एवं तकनीकी प्रयासों के उपरान्त भी यदि सरकारें रोक पाने में समर्थ नहीं हैं तो ऐसे में गांधी जी का ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त ही एक विकल्प हो सकता है।

10. गांधी–दर्शन मनुष्य की अन्तःचेतना को जागृत करके उसे सृजनात्मक मार्ग पर अग्रसर करता है। गांधी जी मनुष्य के जीवन में अनुशासन के प्रबल पक्षधर थे। परन्तु अनुशासन के प्रति उनका यह आग्रह बाह्य अनुशासन को लेकर नहीं था अपितु वह व्यक्ति के आन्तरिक अनुशासन पर जोर देते थे। गांधी जी जीवन के आन्तरिक अनुशासन के द्वारा व्यक्ति के लौकिक क्रियाकलापों को अनुशासित किये जाने के हिमायती थे। आज के समय में जब चारों ओर अनुशासनहीनता और अनाचरण व्याप्त दिखायी देता है और इसे कानून और न्याय को लागू करने वाली संस्थाएं भी अपने सारे प्रयत्न के बाद भी रोक नहीं पा रही हैं तो ऐसे में गांधी जी द्वारा बताया गया आत्म–अनुशासन ही एक मात्र व्यावहारिक विकल्प दिखाई देती है। गांधी जी का स्पष्ट मत था कि कानून और उसे लागू करने वाली संस्थाओं द्वारा पैदा किये जाने वाला भय एवं बाहर से थोपी जाने वाली वर्जनाऐं अल्पजीवी होते हैं और वह व्यक्ति के अन्दर हमेशा के लिए अनुशासन पैदा नहीं कर सकती हैं। क्योंकि मनुष्य स्वभाव से ही स्वतंत्रता का आग्रही होता है और बाहर से थोपी गयी वर्जना को वह सदैव तोड़ना चाहता है। यह प्रयोग स्वयं गाधी जी ने अपने जीवन में एक शरारती बच्चे के साथ उसके माता–पिता की शिकायत पर करके दिखाया था। बच्चा गुड़ बहुत खाता था और इस कारण प्रायः बीमार रहता था। उसके माता–पिता उससे गुड़ छिपाकर रखते थे और बच्चे को प्रायः फटकार भी लगाते थे। परन्तु बच्चा नहीं मानता था और उन्हें गुड़ खाने के लिए परेशान कर रखा था। गांधी जी को यह बात जब मालूम हुई तो उन्होंने बच्चे के माता–पिता से कहकर कुछ दिनों के लिए उसे अपने आश्रम में रख लिया और उसे प्रचुर मात्रा में गुड़ और केवल गुड़ खाने के लिए देने लगे। बच्चा शुरू में तो गुड़ खूब मन से खाता रहा और ऊपर से स्वयं गांधी जी भी उसको बार–बार गुड़ खाने के लिए कहते रहते थे। परिणाम यह हुआ कि कुछ ही दिनों में बच्चा गुड़ से पूरी तरह ऊब गया और गुड़ की तरफ देखना भी उसे नापसन्द हो गया। इस तरह बच्चे ने कुछ ही दिनों में गुड़ खाना पूरी तरह से छोड़ दिया। बच्चे के माता–पिता को यह जानकर घोर आश्चर्य हुआ और अपने द्वारा बच्चे पर थोपी गयी बाहरी वर्जना की भूल का भी अहसास हुआ। गांधी जी का उपर्युक्त प्रयोग वास्तव में ईशावास्योपनिषद के इस दर्शन से प्रेरित था जहां कहा गया है कि ***त्येन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्*** जिसका अर्थ है कि भौतिक पदार्थों अथवा सम्पदा का उपभोग त्यागपूर्वक करना चाहिए न कि उसमें आसक्त अथवा निमग्न होकर। गांधी जी का उपर्युक्त चिंतन किसी भी विवेकशील व्यक्ति के लिए कल्याणकारक हो सकता है ।

11. गांधी जी के चिन्तन का उस युग के विख्यात वैज्ञानिक आइंस्टीन पर तो इतना गहरा प्रभाव पड़ा था कि आइंस्टीन को कहना पड़ा था कि आने वाली पीढ़ियां शायद ही विश्वास करें कि गांधी नाम का हाड़–मांस का एक व्यक्ति कभी इतनी मौलिक और सार्थक सोच के साथ इस संसार में पैदा हुआ था। गांधी जी आज भले ही एक व्यक्ति के रूप में जीवित नहीं हों परन्तु एक शाश्वत् एवं सशक्त विचारधारा के रूप में वह सदैव जीवित रहेंगे और विश्व के लिए प्रासंगिक बने रहेंगे।

12. आज ही के दिन भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व0 लाल बहादुर शास्त्री जी का भी जन्म हुआ था। शास्त्री जी गांधी जी की विचारधारा के प्रबल अनुयायी थे। अहिंसा एवं शान्ति केवल शक्ति सम्पन्न और सबल को शोभा देती है, निर्बल, असहाय, अशक्त को नहीं। लाल बहादुर शास्त्री जी इसे अच्छी तरह समझते थे। इसीलिए उन्होंने जय जवान, जय किसान का नारा दिया था और देश को सैन्य एवं आर्थिक दृष्टि से आत्म–निर्भर, सबल और स्वावलम्बी बनाने का प्रयत्न किया था। यदि हिंसक भालू के सामने कोई आ जाये और भालू से हिंसा नहीं करने को कहने लगे तो अहिंसा की ऐसी अवधारणा का उस समय कोई अर्थ नहीं रह जायेगा अपितु अपने बचाव के लिए भालू से अधिक हिंसक होना पड़ेगा।

13. गांधी जी और लाल बहादुर शास्त्री जी जैसे युगपुरुषों के प्रति अपने इन्हीं विनम्र भावों के साथ मैं अपने श्रद्धासुमन सर्मिपत करता हूं और उन्हें नमन करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूँ ।

धन्यवाद ।

*****